हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में पहुँचाने पर युगपुरुष महात्मा गांधी का योगदान

डॉ० वजीरा गुनासेना
वरिष्ठ व्याख्याता
हिंदी विभाग
श्री जयवर्धनेपुरा गंगोडाविल्ला विश्वविद्यालय
नुगेगोडा, कॉलम्बो, श्रीलंका
ईमेलः wajiragunasena@sjp.ac.lk

सारांश

चल पड़े जिधर दो डग मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर

करोड़ों पैरों को अपने पीछे चलने की प्रेरणा देने वाले मोहनदास करमचंद गांधी भरतवर्ष में बापू के नाम से और संसार में महात्मा गांधी के नाम से जाना गया। गांधी विश्व के महापुरुषों में से थे। उनका जन्म 02 अक्टूबर 1869 में कठियावाड़ के एक वैश्या परिवार में हुआ। अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति की महिला पुतलीबाई उनकी माता थी। उनके घर में रामायण और भागवत का पाठ निरंतर होता था और भक्ति के गीत गाये जाते थे। बाल्यकाल से ही धार्मिक परिवेश में पलकर गांधी जी अत्यधिक धार्मिक चरित्र के व्यक्ति के रूप में विकसित हुए। इस प्रकार उनको एक महान आत्मा का संस्कार बचपन में ही उनकी माता से मिला। महात्मा बुद्ध के बाद शान्ति के वे ऐसे मसीहा थे, जिन्होंने सत्य, अहिंसा के व्यापक महत्व को समझा और अपने में आत्मसात कर क्रियान्वित भी किया। यद्यपि गान्ध ी जी परंपरागत अर्थों में दाशर्निक नहीं थे, किंतु उन्होंने दर्शन को सभी समस्याओं पर गंभीर विचार किया। इसलिए उनका दर्शन एक प्रकार से धार्मिक दर्शन कहा जा सकता है। उनका दर्शन वेदान्त के समान हर जगह एक ही परम तत्व देखने पर विशेष ज़ोर देता है।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 06.09.2022
Approved: 17.09.2022

डॉ० वजीरा गुनासेना

हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में पहुँचाने पर युगपुरुष महात्मा गांधी का योगदान

RJPP Apr.22-Sept.22, Vol. XX, No. II,

pp.323-327
Article No. 42

***Online available at** :*
https://anubooks.com/rjpp-2022-vol-xx-no-2

सन् 1888 में वे कानून का अध्ययन करने के लिए इंग्लैंड गये और सन् 1891 में वे इंग्लैंड में बैरिस्टरी की परीक्षा पास करके देश वापस आये। शीघ्र ही उनकी वकालत के काम से दक्षिण अफ़्रिका जाना पड़ा। अफ़्रिका प्रवास में उन्होंने अध्यापक, चिकित्सक तथा पत्र संपादक के रूप में कार्य किया और आश्रम जीवन का आरंभ किया। यह आश्रम जीवन भी गांधी जी की जीवन प्रणाली में उस समय से आरंभ होकर अंत तक दिखाई पड़ता है।

गांधी जी के सार्वजनिक जीवन का प्रारंभिक भाग दक्षिणी अफ़्रिका में बीता और बीस वर्ष रहकर उन्हें भारतवासियों की स्थिति का अनुभव किया। उससे संघर्ष करने की प्रेरणा मिली। सन 1901 में वे भारत लौटे और इसी वर्ष उन्होंने कलकत्ता में कांग्रेज़ अधिवेशन में भारत के राजनैतिक जीवन का आरंभ किया। 25 मई 1914 को उन्होंने अहमदाबाद में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। सन् 1915 में भारत के राजनीतिक जीवन में जुट गये और सन् 1917 में गुजरात में होने वाली दूसरी गुजरात का शिक्षा परिषद के अधिवेशन में उन्होंने हिंदी के महत्व की सर्व प्रथम घोषणा की। यहां से ही उनके राष्ट्र भाषा हिंदी के प्रति प्रेम एवं आदर की आभास मिलता है। उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा के संबंध में इस प्रकार कहा था–

"राष्ट्र की भाषा अंग्रेज़ी नहीं हो सकती। अंग्रेज़ी को राष्ट्र भाषा बनाना देश में एसपेरेण्टी को दाखिल करना है। अंग्रेज़ी को राष्ट्र भाषा बनाने की कल्पना हमारी निर्बलता की निशानी है।" (डॉ वर्मा, शिवराज, हिंदी का राष्ट्र भाषा के रूप में विकास, पृष्ठ 185.)

सन् 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन का 8वीं अधिवेशन इन्दौर में हुआ। हिंदी प्रेमी तथा सम्मेलन के कर्णधार गांधी जी के हिंदी प्रेम तथा राष्ट्र भाषा संबंधी विचारों से पूर्णतया परिचित थे। इस अधिवेशन में भाषा को माता के समान मानते हुए लोगों से आग्रह किया कि वे अपनी भाषा के प्रति पूर्ण प्रेम तथा आदर दिखाए। यहां उन्होंने अपने मत प्रकट करते हुए कहा,

"आप हिंदी को भारत की राष्ट्र भाषा बनाने का गौरव पदान करे। हिंदी सब समझते हैं। इसे राष्ट्र भाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए।" (डॉ वर्मा, शिवराज, हिंदी का राष्ट्र भाषा के रूप में विकास, पृष्ठ 185.)

उन्होंने सम्मेलन के इस अधिवेशन में ही अहिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी भाषा प्रचार करने की व्यापक योजना बनायी तथा इसके फलस्वरूप दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की। इस योजना सफल बनाने के लिए उन्होंने अपने पुत्र देवदास को दक्षिण में हिंदी शिक्षकों के एक दल के साथ दक्षिण भारत में भेजा और इससे राष्ट्र भाषा आंदोलन को बड़ा बल मिला। इस प्रकार अन्य राजनीतिक कार्य के समान हिंदी प्रचार कार्य भी उनका विशेष रुचि होने लगा।

सन् 1919 में रोलैट एक्ट नामक दमनपूर्ण कानून के विरुद्ध में अपने अपना पहला सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया। इन्हीं दिनों अपने गुजराती नवजीवन और अंग्रेज़ी यंग इंडिया सप्ताहिक पत्र का सम्पादन किया। (डॉ डुबे शुकदेव, हमारे महापुरुष, पृष्ठ 25.)

सन् 1920 में गुजरात की विद्यापीठ स्थापित किया और इनमें से राष्ट्रीय शिक्षा के साथ–साथ हिंदी हिंदुस्तानी के व्यापक प्रचार के लिए पर्याप्त बल मिला। इसके पाठ्यक्रमों में हिंदी पढ़ाना भी अनिवार्य हुआ। उन कारणों से भी हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में

विकसित होने का अवसर मिला। सन् 1920 से लेकर सन् 1947 तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का काल गांधी युग कहलाता है। क्योंकि इस युग में भारतवर्ष में जो कुछ हुआ उसका नेतृत्व गांधी जी ने किया था। इस युग की घटनाओं से गांधी जी की भूमिकाएँ प्रमुख हैं। उन घटनाओं में से 15 अगस्त को स्वतंत्र भारत की घोषणा सर्वश्रेष्ट मानी जाती है। सन् 1947 में गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेज़ के प्रयत्नों से देश की स्वतंत्रता प्राप्त हुई तथा भारतवर्ष में राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी भाषा अग्रसर हुई।

दिसंबर सन् 1924 में हिंदी बेलग्राम में कांग्रेज़ का अध्यक्ष बन गये। उन्होंने इसके अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए प्रान्तीय भाषाओं तथा हिंदी हिंदुस्तानी के अदालतों तथा विधान सभाओं आदि में प्रयोग पर ज़ोर दिया। कांग्रेज़ का 40वां अधिवेशन कानपुर में होते समय उनकी प्रेरणा से कांग्रेज़ का सब कार्य हिंदुस्तानी में करने का निर्णय किया। इससे हिंदी की राजनीतिक स्थिति दृढ़ हो गयी।

सन् 1935 में हिंदी साहित्य सम्मेलन का 24वां अधिवेशन इन्दौर में हुआ। इसमें गांधी जी का हिंदी की परिभाषा के संबंध मतभेद अवश्य हो गया। परंतु गांधी जी ने हिंदी के प्रचार क्षेत्र में एक अन्य ठोस कदम उठाया। इसके अनुसार दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के समान सम्मेलन ने 1936 में हिंदी प्रचार समिति का स्थापित किया।

इस प्रकार गांधी जी ने अपने विचारों को मूर्ति रूप देने के लिए अनेक संस्थाओं की स्थापना की। ये सभी संस्थाएँ गांधी सेवा संघ, तालीमी संघ आदि अधिकतर अपना कार्य हिंदी में करती थी। इनमें हिंदी प्रचार–प्रसार कार्य विशेष सहायता मिली और हिंदी देश व्यापी भाषा बनने का सौभाग्य मिला।

शिक्षा के संबंध में गांधी जी कहते थे कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य शिशु और मनुष्य में शरीर, मन और आत्मा जो कुछ सर्वोत्तम है उसकी सर्वांगीण अभिव्यक्ति है। साक्षरता शिक्षा का लक्ष्य नहीं है और न तो उससे शिक्षा आरंभ होती है। वह तो उन साधनों में से एक है जिससे स्त्री पुरुष शिक्षित किये जाते हैं। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य स्वावलंबन है। शिक्षा के द्वारा प्रत्येक बालक बालिका को पूर्ण रूप से स्वावलंबन में जीविकोपार्जन की योग्यता भी सम्मिलित है। गांधी जी के शब्दों में,

''शिक्षा बेरोज़गारी के विरुद्ध एक प्रकार का बीमा होना चाहिए। सच्ची शिक्षा वह है जो बालकों की आध्यात्मिक बौद्धिक और शारीरिक शक्तियों को प्रोत्साहित करती है।''

इस प्रकार शिक्षा का लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। उसमें बालक के मस्तिष्क के साथ उसके शरीर और आत्मा का भी पूर्ण विकास होता है। गांधी जी शिक्षा को चरित्र निर्माण का आधार मानते थे।

गुजराती में लिखे गये गांधी जी के सत्यग्रह 'सम्रणों इतिहासं' नामक ग्रंथ में उनकी विचार धारा अत्यंत व्यापक रूप से समझायी गयी है। गांधी जी बुनियादी शिक्षा में शिक्षा का सर्वोपरी माध्यम मातृभाषा को मानते थे। उनका कहना था कि मुझे अपनी मातृभाषा से उसी तरह चिपटे रहना चाहिए जिस तरह मैं अपनी माता से चिपटता हूँ।

गांधी जी ने अंग्रेज़ सरकार द्वारा चलायी गयी तत्कालीन शिक्षा योजना की कटु आलोचना की तथा वे शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी के कट्टर विरोधी थे। उस संबंध में उन्होंने कहा,

आज जबकि हमारे पास निशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को प्रारंभ करने के साधन तक नहीं है। हम अंग्रेज़ी पढ़ाने की व्यवस्था जिस तरह कर सकते हैं। रूस ने अंग्रेज़ी के बिना ही अपनी समस्त वैज्ञानिक क्रिया की है। यह हमारी मानसिक दासता है, जो हमें यह अनुभव करने को बाध्य करती है कि हम अंग्रज़ी के बिना काम नहीं कर सकते। हम इस पलायनशीलता का समर्थन कभी नहीं कर सकते।

उनका विचार था कि राष्ट्रभाषा के माध्यम से शिक्षा पर ही देश की संस्कृति तथा साहित्य समृद्ध होंगे और विभिन्न वर्ग के लोगों में भाईचारा बढ़ेगा। उनका मत स्पष्ट था कि बेसिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। जिस प्रकार उन्होंने अपनी मातृभाषा को श्रेष्ठता दिखाने के लिए अपने हर विचारों तथा मतों को व्यक्त किया है उसी प्रकार अंग्रेज़ी शासन काल में अंग्रेज़ी शिक्षा के विरुद्ध अपना मत व्यक्त किया है। उन्होंने कहा,

''बालकों पर अंग्रेज़ी को लादना उनके प्राकृतिक विकास को सुगठित करना तथा सम्भवतः उनकी मौलिकता को नष्ट कर देना है।''

उनके शिक्षा दर्शन का उद्देश्य एक नये समाज की स्थापना का था तथा वे एक जनतंत्र चाहते थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा, शिक्षकों के लिए आवश्यक गुण, शिक्षा के लक्ष्य और साधान इन सभी विषयों पर अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये। सत्य और अहिंसा को जीवन का चरम लक्ष्य माना और उसी सत्य, अहिंसा के बल पर सदियों की गुलामी से भारत की आज़ादी दिखायी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम तथा हिंदी भाषा राष्ट्र भाषा के रूप में पहुंचाने के लिए महात्मा गांधी जी का योगदान उनके हरेक कार्यों में निहित था। उनके मनसा, वाचा, कर्मणा में कहीं कोई अंतर नहीं था।

''आनेवाली पीढ़ियाँ शायद मुश्किल से ही यह विश्वास कर सकेंगी कि गांधी जैसा हाड मांस का पुतला कभी इस धरती पर हुआ होगा।''

अल्बर्ट हाइन्स्टीन का उपर्युक्त कथन आज के इस अमानवीय तथा आतंकवादी कृत्यों को देखकर सचमुच बहुत कुछ सोचने पर विवश कर देता है कि गांधी मात्र हांड मांस के व्यक्ति ही नहीं थे बल्कि वे संपूर्ण एक विचारात्मक आंदोलन थे, सामयिक दर्शन थे और पुरन्देशी युग पुरुष थे।

20वीं शती में भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन को गांधी जी जैसा उच्च सिद्धन्तवाला तथा एक अति कुशल नेता मिला। वे समाज सुधारक, सफल राजनीतिज्ञ, कुशल राजनेता, व्यवहारिक, आदर्शवादी, महान संगठनकारी तथा सर्वप्रिय जन नेता था, उन्होंने परतंत्र भारत देश की समस्त समस्याओं का हल निकाला और भारतवासियों का पथ प्रदर्श किया गया। अभाग्यवश 30 जनवरी 1948 में मुग्ध हिंदू आतंकवादी नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी।

संदर्भ

1. शिवराज, डॉ0 वर्मा. (1970). हिंदी का राष्ट्र भाषा के रूप में. विकास प्रकाशक रामलाल पूरी, संचालक, आत्माराम एंड संसः काश्मीरी गेट, दिल्ली 6.

2. गांधी, करमचंद मोहन. (1957). सत्य से प्रयोग अथवा आत्म कथा. नवजीवन प्रकाशनः अहमदाबाद।
3. गांधी, करमचंद मोहन. (1849). महिलाओं से. बनारस।
4. गांधी, महात्मा. (1962). मेरा विद्यार्थी जीवन।
5. गांधी, महात्मा. (1962). विद्यार्थियों का संदेश।
6. उपाध्याय, रामनारायण. (1982). गांधी की राह पर. विश्व भारती प्रकाशनः नागपुर।
7. राव, संध्या. (2007). तस्वीरों में गांधी. तुलीक प्रकाशनः चेन्नाई।
8. सिंह, शंकर दयाल. (1996). गांधी और अहिंसक आंदोलन. किताब घरः नयी दिल्ली।
9. सुजाता. (2012). गांधी की नैतिकता. सर्वसेवा संघ प्रकाशनः वाराणसी।
10. स्वराज, हिंद. (1949). करमचंद गांधी मोहनदास. नवजीवन प्रकाशन मंदिरः अहमदाबाद।